देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

यदि तुम्हारे घर के
एक कमरे में आग लगी हो
तो क्या तुम
दूसरे कमरे में सो सकते हो?
यदि तुम्हारे घर के एक कमरे में
लाशें सड़ रहीं हों
तो क्या तुम
दूसरे कमरे में प्रार्थना कर सकते हो?
यदि हाँ
तो मुझे तुम से
कुछ नहीं कहना है।

देश कागज पर बना
नक्शा नहीं होता
कि एक हिस्से के फट जाने पर
बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें
और नदियां, पर्वत, शहर, गांव
वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें
अनमने रहें।
यदि तुम यह नहीं मानते
तो मुझे तुम्हारे साथ
नहीं रहना है।

इस दुनिया में आदमी की जान से बड़ा
कुछ भी नहीं है
न ईश्वर
न ज्ञान
न चुनाव
कागज पर लिखी कोई भी इबारत
फाड़ी जा सकती है
और जमीन की सात परतों के भीतर
गाड़ी जा सकती है।

जो विवेक
खड़ा हो लाशों को टेक
वह अंधा है
जो शासन
चल रहा हो बंदूक की नली से
हत्यारों का धंधा है
यदि तुम यह नहीं मानते
तो मुझे
अब एक क्षण भी
तुम्हें नहीं सहना है।

याद रखो
एक बच्चे की हत्या
एक औरत की मौत
एक आदमी का
गोलियों से चिथड़ा तन
किसी शासन का ही नहीं
सम्पूर्ण राष्ट्र का है पतन।

ऐसा खून बहकर
धरती में जज्ब नहीं होता
आकाश में फहराते झंडों को
काला करता है।
जिस धरती पर
फौजी बूटों के निशान हों
और उन पर
लाशें गिर रही हों
वह धरती
यदि तुम्हारे खून में
आग बन कर नहीं दौड़ती
तो समझ लो
तुम बंजर हो गये हो-
तुम्हें यहां सांस लेने तक का नहीं है अधिकार
तुम्हारे लिए नहीं रहा अब यह संसार।

आखिरी बात
बिल्कुल साफ
किसी हत्यारे को
कभी मत करो माफ
चाहे हो वह तुम्हारा यार
धर्म का ठेकेदार,
चाहे लोकतंत्र का
स्वनामधन्य पहरेदार।

§

A country is not a map drawn on paper

Sarveshwar Dayal Saxena

If one room in your house
is engulfed in flames
would you be able to
sleep in the room next to it?
If one room in your house is
full of rotting corpses
would you be able to pray
in the room next to it?
If yes
then I have nothing left
to say to you

A country is not a map
drawn on paper
tear off a piece
and the other parts remain whole
rivers, mountains, cities and villages
in their respective places
just like before
indifferent
If you don’t think so
then I cannot be with you
a moment longer

There’s nothing bigger in this world
than the life of a human
Not god
Not knowledge
Not elections
Any composition written on paper can be
torn to shreds
buried under seven layers
of earth

A conscience
that props itself up with corpses
is blind
A regime
that rules at gunpoint
is a killer’s trade
nothing more

If you don’t think so
I cannot endure your presence
a moment longer

Keep this in mind
the murder of a child
the death of a woman
the bullet-riddled body
of a man
is the decay not only of a regime
but of the whole nation

Such blood as is shed
is not absorbed by earth
but tars the pennants
flying high in the heavens
If that earth
marked by trampling jackboots
and lifeless bodies falling over them
does not become
an all-consuming fire
racing in your bloodstream
realise that you have become barren
not for you the right to even breathe in this world
Not for you this world a moment longer

One final thing
crystal clear
never forgive
the killer
whether he’s your friend
a faith peddler
or democracy’s self-styled
defender

Translated from the Hindi original by Chitra Padmanabhan.